

नौकरी की किताब
सत्र 29: अय्यूब की पुस्तक का संदेश
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 29 है, नौकरी की पुस्तक का संदेश।

क्यों प्रश्न का कोई उत्तर नहीं [00:21-2:35]

तो, अंततः, हम नौकरी की पुस्तक के संदेश को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए तैयार हैं। क्या यह उत्तर देता है? यह इस पर निर्भर करता है कि आपके प्रश्न क्या हैं। यदि आपका प्रश्न है, "क्यों?", तो शायद नहीं। अय्यूब ने कभी नहीं बताया कि उसे कष्ट क्यों हुआ। अय्यूब के व्यवहार में उस पीड़ा का कोई कारण या कारण नहीं है। जब हम अतीत की ओर देखते हैं तो हम कारण तलाश रहे होते हैं। जैसा कि हमने जॉन 9 में बात की थी, हमें उद्देश्य की तलाश में, यीशु की सलाह पर भविष्य की ओर देखना चाहिए। अतीत के बारे में पूछने का पहला प्रयास क्यों छोड़ दिया जाना चाहिए। और यहां तक कि बाद वाले उद्देश्य की तलाश को भी हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि तथ्य यह है कि जब हम उद्देश्य की तलाश करते हैं, तब भी हम उसे हमेशा नहीं पाते हैं। यह सोचने का कोई आधार नहीं है कि कारण मौजूद हैं।

हमारा आधुनिक रुझान यह कहने का है कि, ठीक है, शायद मैं कारण नहीं जान सकता, लेकिन मैं स्वर्ग में इसका पता लगा लूंगा। मैं कल्पना करता हूं कि लोग कारण जानने के लिए बूथ पर कतार में खड़े हैं और यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि उन्हें यह या वह कष्ट क्यों झेलना पड़ा। इस पर भरोसा मत करो. क्योंकि ऐसा सिर्फ नहीं है कि हम कारण नहीं जानते, और ऐसा भी नहीं है कि हम कारण नहीं जान सकते; बात यह है कि हो सकता है कि इसका कोई कारण न हो। हमारे कुछ अनुभव ऐसी दुनिया में रहने का परिणाम हैं जिसमें गैर-व्यवस्था और अव्यवस्था शामिल है; फिर, वे अनुभव कारणों का परिणाम नहीं हैं। वे दुनिया जैसी है वैसी होने का परिणाम हैं। यह कोई कारण नहीं है.

अपनी रक्षा के लिए भगवान को बुलाना गलत है [2:35-2:55]

इसके विपरीत, हम अपने कष्टों के लिए उद्देश्य तलाश सकते हैं, लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है कि हम उन्हें ढूँढ लेंगे, और उद्देश्य स्वयं जटिल हो सकते हैं। इसलिए, यदि आपका प्रश्न यह है कि आपको अय्यूब की पुस्तक में या कभी भी उत्तर की अपेक्षा क्यों नहीं करनी चाहिए। यदि आपका प्रश्न यह है कि ईश्वर क्या कर रहा है? और आपके मन में यह विचार है कि ईश्वर इस संसार में क्या कर रहा है, इसके लिए उसे बहुत कुछ उत्तर देना है ; ठीक है, नहीं, हमें उस उत्तर की अपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए। हमें यह आशा नहीं करनी चाहिए कि ईश्वर स्वयं अपनी रक्षा करेगा। ईश्वर को अदालत में बुलाना, उससे अपना बचाव करवाना अय्यूब की गलती है। नहीं, नहीं , हमें ईश्वर से यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वह अपनी रक्षा करेगा। ईश्वर जो कर रहा है उसकी व्याख्याएँ निश्चित रूप से हमारे वेतन ग्रेड से बहुत ऊपर और हमारी खोज से परे हैं।

निष्काम धार्मिकता [2:55-4:49]

क्या होगा यदि हमारा प्रश्न यह है: क्या निष्काम धार्मिकता है? अब, निस्संदेह, यह वह प्रश्न नहीं है जो लोग पूछते हैं, लेकिन यह वह प्रश्न है जो चैलेंजर ने प्रस्तुत किया है, और यह वह प्रश्न है जो पुस्तक के एक बड़े हिस्से के लिए एक विषय है। यह वास्तव में पूछने के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि पुस्तक यही प्रश्न प्रस्तुत करती है। क्या कोई बिना कुछ लिये भगवान की सेवा करता है? क्या मैं? क्या आप? हमें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि हम निःशुल्क सेवा करने के लिए तैयार रहें। ईसाइयों के रूप में, हमारे पास लाभ, शाश्वत जीवन, क्षमा, मोक्ष और लाभ हैं, लेकिन हम उन्हें अर्जित नहीं करते हैं। ऐसा नहीं है कि हम उनके लायक हैं। हमें बिना किसी शुल्क के ईश्वर की सेवा करने के लिए तैयार रहना चाहिए, भले ही हमें इससे कोई लाभ न मिले।

इसका कोई कारण नहीं हो सकता है [4:49-5:27]

इस तथ्य से परे कि हमें कोई स्पष्टीकरण नहीं मिलता कि कुछ क्यों हुआ, पुस्तक हमें उस महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि तक पहुंचने में मदद करती है जिसके बारे में हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि कोई स्पष्टीकरण है। फिर, कोई कारण नहीं है। दूसरे शब्दों में, यह सिर्फ एक मामला नहीं है कि एक उत्तर है, और हम केवल इसलिए नहीं जान सकते क्योंकि हम इसे समझ नहीं सकते हैं या

क्योंकि इसे रोका जा रहा है। हो सकता है कि इसका कोई कारण न हो, और हमें इसके साथ जीने के लिए तैयार रहना होगा।

हम भगवान, भगवान से आगे नहीं निकल सकते [5:27-6:22]

एक और बात जो हम सीखते हैं वह यह है कि हम ईश्वर, ईश्वर से बाहर नहीं निकल सकते। हमें अपने आप को यह भ्रम नहीं रखना चाहिए कि, दुनिया पर शासन करते हुए, हम इसे बेहतर कर सकते हैं। याद रखें, अध्याय 40 में, भगवान अय्यूब को अलंकारिक रूप से यह प्रदान करता है। आगे बढ़ो, इसे आजमाओ। वो कैसा जा रहा है? हम इसे बेहतर नहीं कर सकते। इसका मतलब यह नहीं है कि हम यह कह रहे हैं, "ठीक है, भगवान बहुत अच्छा काम नहीं करता है। मैं इसे बेहतर नहीं कर सकता, लेकिन वह बहुत अच्छा काम नहीं कर रहा है।" नहीं, नहीं, लेकिन हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम ईश्वर, ईश्वर को मात दे सकते हैं। इस तरह की गलत सोच हमें बिल्कुल अय्यूब की जगह पर खड़ा कर देती है, हम ईश्वर के बारे में बहुत ही सरल और यंत्रवत् सोचते हैं और अपने बारे में बहुत ऊँचा सोचते हैं।

मुख्य संदेश दुख के बीच में भगवान पर भरोसा करना है [6:22-8:05]

पुस्तक के संदेश की कुंजी यह है कि विश्वास ही एकमात्र संभावित प्रतिक्रिया है। हमारे अनुभव व्याख्या से परे हैं। यदि कुछ भी मौजूद है तो कारण क्षणभंगुर और अपर्याप्त हैं। स्थिति जितनी बदतर हो, उस पर भरोसा करना उतना ही कठिन होता है और ऐसा करना उतना ही आवश्यक होता है। लेकिन भरोसा यही है। यदि हमारे पास सभी उत्तर हों, तो हमें भरोसा करने की आवश्यकता नहीं होगी। विश्वास वहां आता है जहां तर्क विफल हो जाता है। भगवान की बुद्धि प्रबल है। ईश्वर के न्याय की पुष्टि की जानी चाहिए लेकिन हमारे अनुभवों में स्पष्ट होने की उम्मीद नहीं की जा सकती। हमारे दिमाग में हमारे लाभों का अवमूल्यन होना चाहिए। हम लाभ के लिए नहीं जीते हैं। ईश्वर के साथ हमारी साझेदारी सर्वोपरि है। उसने हमें ब्रह्मांड के लिए अपनी योजनाओं और उद्देश्यों के एक महान उद्यम में भागीदार बनाया है। वह जो कर रहा है उसमें हमें सहभागी बनना होगा, उसके साथ साझेदारी करनी होगी। हम इससे जो प्राप्त करते हैं उसका मूल्य है लेकिन यह हमारी प्रतिबद्धताओं और व्यवहार में प्रेरक कारक नहीं होना चाहिए।

इब्राहीम और लाभ के बिना भगवान की सेवा [8:05-10:37]

अय्यूब की पुस्तक का सन्देश: क्या तुम परमेश्वर की सेवा मुफ्त में करते हो? या क्या आप केवल उससे प्राप्त होने वाले लाभ के लिए ही परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं? फिर, इब्राहीम को कुछ ऐसा ही करने के लिए कहा गया। उस वेदी पर सिर्फ उसका बेटा ही नहीं बंधा था। यह वाचा और सभी वाचा के वादे थे क्योंकि यदि इसहाक नहीं होता, तो कोई वाचा नहीं होती। परिवार खत्म हो जाता है, कोई ज़मीन नहीं, कोई परिवार नहीं, कोई आशीर्वाद नहीं। उस समय तक वाचा उस वेदी पर थी; परमेश्वर ने इब्राहीम से जो कुछ भी त्यागने के लिए कहा, उसने बदले में उससे कुछ बेहतर करने का वादा किया। फिर भी, इब्राहीम के लिए विश्वास की आवश्यकता थी, लेकिन वह हमेशा विश्वास में प्रतिक्रिया देकर वाचा के माध्यम से लाभ प्राप्त करने में सफल रहा।

अध्याय 22 में, ऐसा नहीं है। इब्राहीम के पास हासिल करने के लिए कुछ भी नहीं है, ऐसा कुछ भी नहीं है जो उस कूबड़ से उबरना आसान बना दे। उसे कुछ भी हासिल नहीं होने वाला। वास्तव में, वह वह सब कुछ त्यागने जा रहा है जो वह प्राप्त कर सकता था। इसीलिए भगवान अध्याय 22, श्लोक 12 में कहते हैं। "अब मुझे पता चला है कि तुम भगवान से डरते हो।" उस शब्द का विकल्प होता। "अब मुझे पता है कि आप इसमें अपने लिए हैं, कि आप इसमें लाभ के लिए हैं, कि आप केवल तभी विश्वास दिखा रहे हैं जब आपको इससे कुछ मिलता है।" वह दूसरा विकल्प होता। परन्तु अब, सारी वाचा अपने प्रिय पुत्र के साथ उस वेदी पर बैठ गई जब वह इसे त्यागने के लिए तैयार था; भगवान ने कहा, "अब मुझे पता चला कि तुम भगवान से डरते हो।" निष्काम धार्मिकता यही है: बाकी सब कुछ त्यागने के लिए तैयार रहना।

तो यह नौकरी की किताब का प्रश्न है। क्या हममें से कोई ईश्वर से व्यर्थ ही डरता है? यह पूछने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, और यह हमें हमारे अंतिम खंड तक ले जाएगा। नौकरी की किताब का आवेदन.

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 29 है, नौकरी की पुस्तक का संदेश। [10:37]